PATNA WOMEN'S COLLEGE AUTONOMOUS 1940

Hindi
Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
UGC Approved List of Journals No. - 64404
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

आपका बंटी : एक विमर्श

• **समीक्षा कश्यप** • **लक्ष्मी सिंह** • **श्वेता कुमारी**
• **कुमारी मनीषा**

Received : November 2018
Accepted : March 2019
Corresponding Author : Kumari Manisha

Abstract : स्वातंत्र्योत्तर कहानी लेखिकाओं में मन्नू भंडारी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये हिन्दी साहित्य जगत की एक ऐसी समर्थ लेखिका हैं जो कथा के माध्यम से जीवन के मर्म को अभिव्यक्त करने में सफल रही हैं। आज आर्थिक उदारीकरण के इस युग में स्वार्थपूर्ति हेतु व्यक्ति जिस दिशा की ओर अग्रसर हो रहा है वह चिंतनीय है। संवेदना का ह्रास इस हद तक हो जाना कि अपने ही अंश की संवेदना से रिक्त हो जाना–हमारे समक्ष अनेकानेक प्रश्न उपस्थित कर देता है। एक ओर जहाँ माता–पिता के बीच का प्रेम और अनुराग बच्चे के सर्वांगीण विकास का आधार बनता है वहीं दाम्पत्य जीवन के तनाव बच्चे के लिए त्रासदी उत्पन्न करते हैं। बच्चे की चेतना में बड़ों के इस संसार को मन्नू भंडारी ने पहली बार पहचाना था। बाल मनोविज्ञान पर आधारित यह उपन्यास भविष्य में आने वाली अत्यंत गंभीर समस्या की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कराता है, जिसके लिए हमें आज से ही सजग होना होगा। अतएव आज के आधुनिक परिवेश के दिनों–दिन बदलते स्वरूप को देखते हुए, आवश्यकता है इस गंभीर समस्या को समझने की और उसका निदान सोचने की। हमने इसी समस्या को लेकर परियोजना कार्य तैयार किया है।

संकेत शब्द (Keywords) : बाल–विमर्श, बाल मनोविज्ञान, स्त्री–विमर्श, स्वार्थ एवं संवेदना का ह्रास, आत्ममंथन, कर्त्तव्यबोध।

समीक्षा कश्यप
बी० ए०–तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

लक्ष्मी सिंह
बी० ए०–तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

श्वेता कुमारी
बी० ए०–तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

कुमारी मनीषा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : drmanishavikash01@gmail.com

भूमिका :

''बंटी किन्हीं दो–एक घरों में नहीं, आज के अनेक परिवारों में साँस ले रहा है–अलग–अलग संदर्भों में, अलग–अलग स्थितियों में।'' (भंडारी, VIII)

''शकुन–अजय के संबंधों की टकराहट में सबसे अधिक पिसता बंटी ही है शकुन और अजय तो आपसी तनाव की असहनीयता से मुक्त होने के लिए एक–दूसरे से मुक्त हो जाते हैं, लेकिन बंटी क्या करे ? वह तो समान रूप से दोनों से जुड़ा है, यानी खंडित–निष्ठा उसकी नियति है।'' (भंडारी, IX)

''आज पापा और डॉक्टर साहब के चेहरे भी तो घुल–मिल जा रहे हैं। पापा की बात सोचो तो डॉक्टर साहब का चेहरा आ जाता है। और डॉक्टर साहब की बात सोचो तो पापा का चेहरा। जैसे दोनों चेहरे एक ही हो गए, अलग–अलग रहे ही नहीं।'' (भंडारी, 157)